www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

कृणवन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 73 अंक : 43
सृष्टि संवत् 1960853117
22 जनवरी, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-73, अंक : 43, 19-22 जनवरी 2017 तदनुसार 9 माघ सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

स्वप्न और उससे बचाव

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यत्स्वप्ने अन्नमश्नामि न प्रातरधिगम्यते।
सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा।।
अथर्व० ७।१०१।१

पर्यावर्ते दुःष्वप्न्यात्पापात्स्वप्न्यादभूत्याः।
ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः।।
अथर्व० ७।१००।१

शब्दार्थ-यत् = जो **अन्नम्** = अन्न **स्वप्ने** = स्वप्न में **अश्नामि** = खाता हूँ, वह **प्रात** : = प्रातः काल [जागने पर] **न** = नहीं **अधिगम्यते** = प्राप्त होता, **तद्** = वह **दिवा** = दिन में जाग्रत् दशा में **नहि** = नहीं **दृश्यते** = दीखता, अतः **तत्** = वह **सर्वम्** = सब **मे** = मेरे लिए **शिवम्** = सुखदायी **अस्तु** = होवे।। **दु : स्वप्रयात्** = दुःस्वप्न से होने वाले **पापात्** = पाप से तथा **स्वप्न्यात्** = स्वप्न से होने वाली **अभिभूत्या** : = अभिभूति, दबाव, तिरस्कार से मैं **पर्य्यावर्त्ते** = लौटता और लौटाता हूँ, **अहम्** = मैं ब्रह्म = ब्रह्म को **अन्तरम्** = बीच में **कृण्वे** = करता हूँ, इससे मैं **स्वप्नमुखा** : = स्वप्नादि **शुच** : = शोक को **परा** = दूर करता हूँ।

व्याख्या-तीन अवस्थाएँ जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति प्रत्येक मनुष्य पर आती हैं। जब सभी इन्द्रियाँ-आँख, नाक, कान आदि अपना-अपना कार्य कर रही हैं, उस अवस्था को जाग्रत् कहते हैं। साधारणतया जीव उस समय बहिर्मुख होता है, तभी बाहर के विषयों का ज्ञान होता है। जिस अवस्था में बह्य इन्द्रियों ने कार्य करना छोड़ दिया है, किन्तु अन्तरिन्द्रिय-मनने कार्य नहीं छोड़ा, उस अवस्था को स्वप्न कहते हैं, इस अवस्था में बहुत बेजोड़ विचार सामने आते हैं। जिस अवस्था में मन भी विश्राम लेने लगता है, कोई इन्द्रिय कार्य नहीं कर रही होती, उस अवस्था को सुषुप्ति या गहरी नींद कहते हैं। उस समय आत्मा का ब्राह्य विषयों से सम्बन्ध न होकर अज्ञात रूप से परमात्मा से सम्बन्ध होता है। यहाँ स्वप्न और दुःस्वप्न का, तथा उनसे होने वाले अनिष्ट और उनसे बचने के उपाय का वर्णन है। **'यत्स्वप्ने अन्नमश्नामि'** में स्वप्न का बहुत सुन्दर लक्षण-सा कर दिया है। स्वप्न में प्राप्त पदार्थ जाग्रत् में कभी उपलब्ध नहीं होता। कभी-कभी अनिष्ट स्वप्न दिखाई देते हैं, डरावने और भयानक सपने आने से मनुष्य के मन पर कुप्रभाव भी पड़ता है, अतः प्रार्थना की-**'सर्वं तदस्तु में शिवम्'** = वह सब मेरे लिए भला करें। मैं ऐसा कोई स्वप्न न देखूँ जिससे मेरा किसी प्रकार अनिष्ट या अमङ्गल हो।

बुरे स्वप्न आने से बहुधा शरीर की हानि भी हुआ करती है। लोग उसकी दवाइयाँ खाकर चिकित्सा करते हैं, किन्तु उसे लाभ नहीं होता। वेद उसकी चिकित्सा बतलाता है- **'ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः'** = मैं ब्रह्म को बीच में करता हूँ और इस प्रकार स्वप्न आदि शोक को दूर करता हूँ, अर्थात् ब्रह्म-चिन्तन से दुःस्वप्न नष्ट होते हैं। अनुभवियों के अग्रगण्य दयानन्द जी इस विषय में उपदेश करते हैं- ''जितेन्द्रिय बनने के अभिलाषी को रात-दिन प्रणव का जाप करना चाहिए। रात को यदि जाप करते हुए आलस्य आदि बहुत बढ़ जाए तो दो घण्टाभर निद्रा लेकर उठ बैठे और पवित्र प्रणव [ओम्] का जाप करना आरम्भ कर दे। बहुत सोने से स्वप्न अधिक आने लगते हैं, ये जितेन्द्रियजन के लिए अनिष्ट हैं।'' मन को ब्रह्म में लगा दो, विषयों से हट जाएगा, फिर विषयों के स्वप्न भी न दिखाएगा।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वर्ष 2017 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2017के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज या आर्य समाज मन्दिर

-पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

महाभारत काल के बाद भारत वर्ष में ईश्वरीय व्यवस्थानुसार ईश्वरीय वाणी वेदों की ओर लौटाने तथा वैदिक धर्म अर्थात् सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग बताने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भारत माता के माथे पर कलंक पराधीनता तथा भारतवासी धार्मिक, अन्ध विश्वास सामाजिक कुरीतियां व भ्रष्ट राजनीति के गहरे संस्कारों में जकड़े हुए थे। महर्षि दयानन्द जी दूरदर्शी थे, उन्होंने समाज में तमाम बुराइयों को दूर करने के लिये एक वैचारिक क्रान्ती का संगठन ''आर्य समाज'' अर्थात् ऐसे लोगों का संगठन जो सदैव उक्त बुराइयों को दूर करने में सहायक हो सकते हैं। आर्य समाज की स्थापना करी। आर्य समाज एक राष्ट्रीय संगठन है।

महर्षि दयानन्द जी ने भारत को ऐसा मंच दिया कि जो भारत की दिशा और दशा सुधारने में सक्रिय आन्दोलित हो उठा। यह ऐतिहासिक सत्य है इस आर्य समाज ने भारत को स्वतन्त्र करा दिया। इस स्वतन्त्रता संग्राम में सर्वाधिक बलिदान आर्य समाजियों ने दिया था।

आर्य समाज के स्थापना के 72 वर्ष 1857 से 1957 तक एक क्रान्तीकारी युग था, उसको हम आर्य समाज का स्वार्णिम युग भी कह सकते हैं। आर्य समाज का सदस्य बनना भी एक गौरव की बात होती थी, क्योंकि आर्य समाज के सदस्य का चरित्र अत्यन्त प्रेरणादायक व सत्यवादी, राष्ट्र-वादी, ईश्वरवादी, शुद्ध समाजवादी होता था। एक निष्ठा एवं समर्पण की भावना साधारण सदस्य तक में होती थी, प्रत्येक आर्य अपनी इकाई में चलता फिरता क्रान्ति वा बिगुल बजाने वाला आर्य समाज था। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यों ने सर्वाधिक बलिदान किये। समाज में तमाम धार्मिक अन्धविश्वास रुढ़ी परम्परायें एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एक वैचारिक आन्दोलन चला दिया तथा ज्ञानमार्ग चुन कर अनेक विषयों पर तत्कालीन मठाधीशों से शास्त्रार्थ करके एक नई ज्योति जगा दी। धार्मिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, राजनैतिक क्षेत्र के महन्तों को सोचने पर मजबूर कर दिया। उनकी सदियों से जमी जड़ें हिलाकर रख दी। इन 72 वर्षों में आर्य समाज ने एक अपना नया इतिहास रच दिया, और महर्षि दयानन्द के कार्यों को पहली श्रेणी में रखा। हम इन वर्षों को आर्य समाज का बलिदानी युग भी कह सकते है।

आर्य समाज ने भारत को स्वतन्त्र करा दिया तथा स्वतन्त्रता मिलते ही, आर्य समाज का अन्दोलन धीमा पड़ गया। क्यों ? क्या चुनौतियां समाप्त हो गयी, क्या हम सचमुच में ही स्वतंत्र हो गये ? क्या महर्षि दयानन्द का सपना पूर्ण हो गया ? आर्य समाज की प्रासंगिता कब तक बनी रहेगी ? आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्यों के साथ हमें इन बिन्दुओं पर गम्भीरता से विचार करना होगा। आर्य समाज एक अनुपम आन्दोलन है। संस्था को जीवित रखने के लिये, मूल उद्देश्यों के प्रति सतत आन्दोलन और उनका क्रियान्वयन आवश्यक होते है। आर्य समाज का सामाजिक आन्दोलन शनै-शनै मरने लगा है और आर्य समाज पर रुढ़ीवाद की जंग लगने लगी है। कालान्तर में यह रुढ़ीवाद की जंग आर्य समाज संगठन को एक सम्प्रदाय का रुप दे सकती है।

आर्य समाज के पदाधिकारी भी विद्वानों से कहते हैं तर्क की बात मत करो, खण्डन मत करो, अन्य बुरा मान जायेंगे। विद्वान मंचों से भींच-भींच कर बात करते हैं क्योंकि, आर्य समाज का वर्तमान युग नेतृत्व पर प्रभावी है। सिद्धान्तों पर कहीं न कहीं समझौता वादी होता जा रहा है। आर्य समाज के सिद्धान्त, आर्य समाज के तथा कथित मन्दिरों में कैद होकर रह गये है। शास्त्रार्थ की परम्परा समाप्त हो गयी है।

मैं आर्य समाजी सन्यासियों विद्वानों इसके प्रति पूर्णतः समर्पित महारथियों को अपवाद मानते हुए निस्संकोच कहना चाहता हूँ कि आम आर्य समाजी दूसरे लोगों के साथ या तो समन्वय स्थापित करने में लगा है, या फिर दूरदर्शिता के अभाव में आर्य समाज व अन्य मतमतान्तरों में अंतर न करके आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति नीरस होता जा रहा है। अधिकांश आर्य परिवारों में जहां वैदिक पताका लहराती थी, उनमें आज गणेश जी व अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां पूजी जाती है। आर्य परिवारों में मिली जुली पूजा हो रही है। यह आर्य समाज के भविष्य के लिये चिन्ता का विषय है।

महर्षि दयानन्द जी ने यज्ञ को देव यज्ञ कहा है, और यह यज्ञ क्रिया आध्यात्मिक व्यक्तिगत पर्यावरण को शुद्ध करने तथा वेद मंत्रों की रक्षा व उस परमपिता का आभास होता रहे यह व्यक्ति का आन्तिरक मामला है। किन्तु यह यज्ञ सर्व सार्वजनिक प्रदर्शन की क्रिया नहीं है। किन्तु आर्य समाज केवल बड़े-बड़े यज्ञों के प्रदर्शन को ही प्रचार समझ रहा है।

यह ठीक है जन संख्या के आधार पर आर्य समाज भवनों की अत्यधिक बढ़ोतरी हुई है। यह भी सत्य है कि आर्य समाज के कार्यकर्ता आर्य समाज के भवनों की देख रेख को ही आर्य समाज का कार्य समझ रहे हैं और अपनी तसल्ली के लिये महर्षि दयानन्द जी के नारे लगा कर सन्तुष्ट हो रहे हैं। सनातनी मन्दिरों में रोज मूर्तियों की पूजा होती है आर्य समाज के मन्दिरों में हवन द्वारा होती है। फर्क केवल यह है सनातनी मूर्ति पूजक है व आर्य समाजी ईश्वर को पूजते हैं। तथा पद लोलुपता, प्रभावशाली व्यक्ति-तत्व एवं परस्पर दोषारोपण से आर्य समाज मूल उद्देश्यों से भटक रहा है। अर्थात् आर्य समाज मन्दिरों में परिवर्तित होने के कारण मन्दिरों में कैद हो गया है।

लाखों वर्षों के स्वर्ण काल के पश्चात पिछले हजारों वर्षों से भारत ने पतन की पीड़ा झेली है। आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी द्वारा इस पीढ़ी से मुक्ति दिलाने की दिशा में बोया गया बीज है। भारत की स्वतन्त्रता का पौधा आज लहलहा रहा है। यह 10 अप्रैल 1875 की आर्य समाज की स्थापना का ही सुपरिणाम है। यह स्पष्ट है आर्य समाज के लिये आने वाला समय अधिक महत्वपूर्ण होगा।

अव्यवस्था अति का दूसरा का नाम है। संसार में वर्तमान में अव्यवस्था है अनीति है, अनाचार है। यह संसार व्यवस्था नीति और सदाचार के लिए तड़प रहा हैं इस तड़प को केवल आर्य समाज ही शान्त कर सकता है। अत: आर्य समाज का भविष्य उज्जवल है, चुनौती को स्वीकार करने और उद्यमशील, पुरुषार्थी व वैदिक सिद्धान्तों के आर्य समाज के मन्दिरों की चार दीवारों से बाहर आकर कार्य करने की आवश्यकता है। आर्य समाज को प्रचार के लिये मीडिया को माध्यम बनाना होगा। आज मीडिया का युग है। मेरे इस लेख का उद्देश्य आर्य समाज में और अत्यधिक कार्य करने की विकास के लिये आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से प्रार्थना करना मात्र है।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर सीरियल बनाना स्वामी रामदेव का प्रशंसनीय कार्य

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित सीरियल के निर्माण का निर्णय स्वामी रामदेव जी का प्रशंसनीय और उत्तम कार्य है। बॉलीवुड के दिग्गज निर्देशकों में शुमार मधुर भंडारकर के साथ मिलकर स्वामी रामदेव जी एक सीरियल का निर्माण करने वाले हैं जिसका नाम है- विद्रोही सन्यासी जिसकी शूटिंग भी शुरू हो गई है। इस सीरियल में महर्षि दयानन्द की राष्ट्रभक्ति दिखाई जाएगी। इस सीरियल के माध्यम से आम जनता को महर्षि दयानन्द के कार्यों एवं जीवन चरित्र का ज्ञान चलेगा जिससे आर्य समाज का प्रचार होगा। महर्षि दयानन्द की विचारधारा राष्ट्रवादी थी, उनके कार्य राष्ट्र का हित करने वाले थे, उन्होंने सर्वप्रथम स्वलिखित सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था। इसलिए अंग्रेजों की दृष्टि में वे विद्रोह करने वाले थे। एक बार जब महर्षि दयानन्द से एक अंग्रेज अधिकारी ने कहा कि स्वामी जी जब आपको हमारे शासन में प्रचार करने की कोई बाधा नहीं है तो आप हमारे चिरस्थाई शासन के लिए परमात्मा से प्रार्थना किया करें। इस पर स्वामी दयानन्द जी ने उत्तर दिया था कि मैं तो परमात्मा से प्रतिदिन यह प्रार्थना करता हूं कि विदेशी शासन का शीघ्र अति शीघ्र अंत हो और इसके लिए लोगों को प्रेरणा भी करता हूं। इसी कारण अंग्रेजों के शासनकाल में स्वामी जी के ऊपर कड़ी निगरानी रखी जाती थी और उन्हें विद्रोही समझा जाता था। विद्रोही सन्यासी शीर्षक के और भी कई कारण है जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तत्कालीन समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों, धर्म के नाम पर स्थापित तथाकथित सम्प्रदायों के खिलाफ विद्रोह किया था। उनके विद्रोह के कारण उस समय के धर्म के ठेकेदारों की जड़े हिल गई थी। स्वामी जी के विद्रोह का परिणाम यह हुआ कि लोगों में जागृति का भाव पैदा हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी शिक्षा के बल पर जोर दिया। उस समय नारी को घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया था। समाज के ठेकेदारों ने उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित करके रखा था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ऐसे लोगों का क्षोभ मोल लेकर भी नारी शिक्षा का बीड़ा अपने ऊपर उठाया और उन्हें इसमें सफलता भी प्राप्त हुई। इसी प्रकार बाल विवाह की प्रथा को खत्म करने पर उन्होंने बल दिया। सती प्रथा को खत्म करने और विधवा के पुनर्विवाह पर भी उन्होंने कार्य किया। इन सब कार्यों के कारण जिन लोगों की जड़े हिल गई थी, धर्म के नाम पर, समाज के नाम पर जिन लोगों का व्यापार बन्द हो गया था उनके लिए महर्षि दयानन्द विद्रोही थे। महर्षि दयानन्द की इसी क्रान्ति के परिणामस्वरूप लोगों में नव उत्साह का संचार हुआ और उन्होंने स्वामी जी के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहयोग किया।

इस सीरियल के माध्यम से महर्षि दयानन्द की राष्ट्रभक्ति को विशेष रूप ये दिखाया जाएगा। सन् 1857 में अंग्रेजों ने प्लासी की लड़ाई जीतने के बाद भारत को पूर्णतया लूटा और लार्ड डल्हौजी ने तो 20 हजार से अधिक पुरानी जमीदारियों को अपहरण नीति के तहत जब्त करके हर प्रकार से हमारा राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक, धार्मिक, व्यापारिक और औद्योगिक शोषण किया, तो सारे देश में सर्वत्र अत्याचारों के विरूद्ध त्राहि-त्राहि मच गई, चारों ओर राजा, नबावों और जनता में विद्रोह की अग्नि जलने लगी। आर्य समाज का इतिहास लिखने वाले पं. सत्यकेतू विद्यालंकार जी ने लिखा है कि 1857 की क्रान्ति में महर्षि दयानन्द ने भाग ही नहीं लिया अपितु नेतृत्व भी किया था। महर्षि दयानन्द जी ने इसीलिए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि कोई कितना भी करे परन्तु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि और उत्तम होता है।

स्वामी रामदेव जी ने जिस प्रकार इलेक्ट्रानिक मीडिया के द्वारा योग का प्रचार करते हुए उसे विश्व स्तर पर मान्यता दिलाई है। उसी प्रकार यह सीरियल भी आर्य समाज के लिए मील का पत्थर साबित होगा। स्वामी रामदेव द्वारा किए जा रहे इस प्रशंसनीय और उत्तम कार्य में सम्पूर्ण आर्य जगत् को पूर्णतया सहयोग करना चाहिए। यह अकेले स्वामी रामदेव का ही उत्तरदायित्व नहीं अपितु सम्पूर्ण आर्य जगत् का उत्तरदायित्व है कि महर्षि दयानन्द की धरोहर को आगे बढ़ाएं। जिन बुराईयों , कुरीतियों के खिलाफ महर्षि दयानन्द ने आन्दोलन किया था वे बुराईयां और कुरीतियां समाज में पुनः न पनपने पाएं इसके लिए आर्य समाज के प्रचार व प्रसार की आवश्यकता है। इस सीरियल के द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन चरित, उनके सिद्धान्तों एवं वैदिक मन्तव्यों का घर-घर में प्रचार होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसलिए आज मीडिया के युग में उसका सही दिशा में प्रयोग किया जाए। स्वामी रामदेव के अन्दर यह क्षमता है कि मीडिया का प्रयोग किस रूप में किया जाए। आज स्वामी रामदेव जी ने योग को विश्व स्तर पर एक पहचान दिलाई है जिसके कारण 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज स्वामी रामदेव पतंजलि आयुर्वेद के माध्यम के लोगों को निरोग करने का प्रशंसनीय कार्य भी कर रहे हैं। उनके उत्पाद शुद्धता एवं गुणवत्ता के प्रतीक हैं जिसके कारण कुछ लोगों में उनके प्रति विद्वेष की भावना भी दिखाई देती है।

आज स्वामी रामदेव ने जिस कार्य को करने का बीड़ा उठाया है उसके लिए सम्पूर्ण आर्य जगत् को उनका धन्यवाद करना चाहिए। सभी आर्यों को मिलकर इस कार्य में कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग करना चाहिए। स्वामी दयानन्द एक राष्ट्रवादी पुरूष थे। उनका प्रत्येक कार्य राष्ट्र के हित के लिए था। महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय विचारधारा से लोगों को अवगत कराने का यही उचित माध्यम है। इस माध्यम से घर-घर में लोगों को वैदिक धर्म का ज्ञान होगा और महर्षि दयानन्द के सार्वभौमिक नियमों का आम जनता में प्रचार होगा। इसलिए हम सभी स्वामी रामदेव के आभारी हैं जिन्होंने इस श्रेष्ठ कार्य को करने का बीड़ा उठाया है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

सत्य के उपासक : महर्षि दयानन्द सरस्वती

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि महादेव, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

(गतांक से आगे)

उन्होंने अनेक देवी देवताओं के स्थान पर एक परमात्मा की पूजा करने का विधान करते हुए परमात्मा के गुण-कर्म और स्वभाव को अपने भीतर धारण करने की प्रेरणा लोगों को दी। इस तरह से भी उन्होंने एकता का सूत्र हमारे सामने रखा है। उनका कथन था कि अनेक पूजा पद्धतियों के कारण मानव-मानव में एकता का अभाव हो जाता है तथा बैर-विरोध को प्रश्रय मिलता है। इसी प्रकार उन्होंने व्यक्तियों के द्वारा रचे गए ग्रन्थों को प्रमाणिक न मानकर परमात्मा के ही ज्ञान वेद को प्रमाणित मानने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने प्रबल तर्कों के आधार पर प्रमाणित किया कि वेद परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है जो मानव मात्र के लिए समान रूप से हैं। उनका कहना है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसी के पठन-पाठन से व्यक्ति मानवीय गुणों से परिपूर्ण हो सकता है। उनकी एक नहीं बहुत सी ऐसी विलक्षणताएं हैं जो उनके मानव हितैषी होने को प्रमाणित करती हैं। मानव मात्र को एक मानना, वेद को व्यवहारिक रूप से परमात्मा का ज्ञान मानना, उसी एक परमात्मा की उपासना करने के साथ-साथ उन्होंने एक भाषा और एक धर्म को मानने का भी आग्रह किया है। इसी से मानव-मानव में प्रेम और सौहार्द स्थापित हो सकता है और देश एवं समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। जितनी आस्था उन्हें परमात्मा पर थी उतनी ही आस्था परमात्मा के ज्ञान वेद पर भी थी। उनका कथन था कि वेद के अनुकूल जो कुछ भी है वह सत्य और धर्म है तथा जो जो उसके विपरीत है वह असत्य और अधर्म है। उन्होंने तथाकथित धर्म के ठेकेदारों के सामने मानव एकता के लिए यह विचार प्रबलता के साथ रखा कि यदि आप लोग वेद के आधार पर सत्य को ग्रहण करके असत्य को त्याग दें तो जो शेष बचेगा वही सच्चा धर्म है और वही मानवीय एकता और सुख का आधार भी है। इसी एक सूत्र से समाज और देश में ही नहीं बल्कि समूचे संसार में एकता स्थापित हो सकती है।

उनके प्रबल तर्कों का उत्तर उस समय के किसी भी संप्रदाय या मजहब के ठेकेदार के पास नहीं था क्योंकि उन लोगों के पास अपने पाखण्डों को सत्य सिद्ध करने के लिए कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। इस प्रकार उन्होंने अपने समय में समूचे भारत में ही नहीं बल्कि पूरे संसार में विचारों की एक नई धारा को प्रवाहित कर दिया। भारतीय ही नहीं बल्कि मैक्समूलर जैसे विदेशी लोग भी जो भारतीयों को असभ्य और वेदादि सत्य ग्रन्थों को गडरियों के गीत कहते थे, उन्होंने भी भारत की महानता और वेद के सत्य को स्वीकार किया। लोगों के पास जब इस सत्य के पुजारी के तर्कों का कोई उत्तर नहीं मिला तो उनका प्रबल विरोध भी हुआ। उन पर कीचड़ और पत्थर ही नहीं जहरीले सांप तक फेंके गए। उन्हें विष देकर समाप्त करने के प्रयास हुए, लठैतों द्वारा उन्हें समाप्त कराना चाहा, उन्हें अन्य अनेक प्रकार से बदनाम करना चाहा मगर वे सबको क्षमा दान ही करते गए और बड़े प्यार से वेद पथ को अपनाने का आग्रह करते रहे। उन्होंने सत्य को किस सीमा तक आत्मसात किया हुआ था वह इस बात से ही पता चल जाता है कि उन्होंने कभी किसी से किसी प्रकार का बदला लेने की नहीं सोची। मौन होकर सत्य के पक्ष में खड़े रहकर सब कुछ सहा। अपने विरोधियों के लिए भी मंगल कामनाएं ही करते रहे। पत्थर और कीचड़ फैंकने वालों तथा गालियां देने वालों को भी मिठाईयां बांटते रहे। उनका कथन था कि जब कोई डाक्टर किसी रोगी का उपचार करने के लिए उसे कड़वी दवाई देता है तो उस डाक्टर को उस मरीज का कोप भाजन होना ही पड़ता है मगर डाक्टर तो अन्तत: उस रोगी का हित ही चाहता है। वे भी एक ऐसे ही डाक्टर थे जो समूची मानवता के रोग को दूर करके उसे स्वस्थ और सबल बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने एक कुशल चिकित्सक के समान सब कुछ सहते हुए भी अपना उपचार जारी रखा। आज हम उनके अत्यधिक धन्यवादी हैं क्योंकि उन्होंने समाज और देश की उन्नति के लिए चतुर्दिक विकास हेतु हमें सबल आधार प्रदान किए है। वे सत्य के ऐसे विलक्षण उपासक थे कि उन्होंने एक बार कहा था- चाहे मेरी उंगलियों को बती की तरह जलाना आरंभ कर दें तब भी में सत्य का ही पक्ष लूंगा। यही नहीं उनका कथन था कि चाहे मुझे तोप के आगे बान्धकर उड़ाने का आदेश दिया जाए तब भी मैं सत्य का ही पक्ष लूंगा।

आज व्यक्ति, परिवार, समाज और देश की जो बुरी स्थिति है उस सबका कारण एक मात्र यही है कि हम लोगों ने असत्य को निर्वासित कर दिया है। धर्म ने आडम्बर का रूप ले लिया है, आत्मा-परमात्मा के नाम पर लोगों को भ्रमित किया जा रहा है। सब जगह धर्म की दुकानें सज गई हैं मगर धर्म का तत्व जो सत्य है वह कहीं दूर छूट गया है। आज कथनी और करनी में साम्यता नहीं रही है। महर्षि दयानन्द जी ने बचपन में ही सच्चे शिव को प्राप्त करने और मृत्युंजयी बनने का संकल्प लिया था और सत्य के आधार पर उन्होंने उन लक्ष्यों को तो प्राप्त किया ही इसके साथ-साथ समाज, देश और समूचे संसार का कितना बड़ा हित कर गए।

दयानन्द पब्लिक स्कूल में खेल प्रतियोगिता का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना में स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार आर्य जी की अध्यक्षता में खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दौरान बच्चों ने कार्यक्रम की शुरुआत 'माँ शारदा' की स्तुति करके की। नन्हें बच्चों की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम 'चन्दा ने पूछा तारों से' पर नृत्य के माध्यम् से अपने जीवन में अपने पिता के महत्त्व को दर्शाया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने 'भांगड़ा नृत्य पेशकर दर्शको' का मन मोह लिया।

स्कूल की प्रिंसीपल 'सुनीता मलिक' तथा वाइस प्रिंसीपल 'निर्मल कांता मैडम और मुख्यातिथि श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल, श्री सतपाल नारंग जी, श्री के. के. पासी जी, श्री बृजेन्द्र मोहन भण्डारी जी, श्रीमति शुभलता भण्डारी जी, श्री विजय सरीन जी, श्री मती शालू मदान जी, श्री मनोज टोडी जी, श्री वेदप्रकाश भण्डारी जी, श्री दीपक जिन्दल जी सभी द्वारा बच्चों को पुरस्कार और मैडलस दिए गए सभी ने बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में सैक रेस, बैक रेस, लैमन-स्पून रेस आदि करवाई गई जिसमें कक्षा सांतवीं का 'साहिल' 'सेक रैस' में प्रथम रहा।

इसके पश्चात स्कूल के उपप्रधान श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी ने बच्चों को पढ़ाई और खेल जगत् के सभी क्षेत्रों में आगे आने की प्रेरणा दी और सभी अभिभावकों का धन्यवाद किया। इसके साथ ही राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की गई।

-सुनीता मलिक प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

''वेद ईश्वरीय ज्ञान है, इसके प्रमाण''

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

वेद ईश्वर-ज्ञान हैं, इसके निम्नलिखित प्रमाण हैं:

1. सृष्टि और वेदों में एकता- सृष्टि में हम जो कुछ देखते है, वैसा ही वेदों से लिखा हुआ है। जब सृष्टि ईश्वर ने बनाई है तो इससे सिद्ध होता है कि वेद भी ईश्वर के ही बनाए हुए हैं। यदि वेद ईश्वर के बनाए हुए नहीं होते तो सृष्टि भी वेदों के अनुसार नहीं होती। जब सृष्टि में और वेदों में एक रूपता है तो इससे सिद्ध होता है कि दोनों चीजें किसी एक की ही बनाई हुए है। अब प्रश्न उठता है कि सृष्टि भी ईश्वर ने नहीं बनाई। ईश्वर ने बनाई इसका क्या प्रमाण है ? इसका उत्तर यह है कि जीव की क्षमता ही नहीं कि वह सृष्टि बना सके। सृष्टि बनाने के लिए सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान का होना जरूरी है। जीव अल्पज्ञ है, एक स्थानीय है और सीमित शक्ति वाला है इसलिए जीव सृष्टि नहीं रच सकता है। यह तीनों गुण ईश्वर में है इसलिए सृष्टि ईश्वर ने रची है। सृष्टि जड़ है यानि अचेतन है तब भी सृष्टि किसी नियम के अनुसार चलती है। जैसे सूर्य समय पर उगता है और समय पर छिपता है। पृथिवी सूर्य के चारों तरफ घूमती है और स्वयं भी अपनी परिधि में घूमती है और चन्द्रमा पृथिवी के चारों तरफ परिक्रमा करता है। जड़ वस्तु में स्वयं में बनने की शक्ति नहीं होती। उसको बनाने के लिए या चलाने के लिए किसी चेतन बुद्धिमान् की आवश्यकता होती है। नियम पूर्वक चलने वाली सृष्टि का कोई नियामक (नियम से चलाने वाला) अवश्य होना चाहिये। इससे सिद्ध होता है कि सृष्टि का नियामक ईश्वर है।

2. वेदों में जीव के लिए पूर्ण ज्ञान है-वेदों में मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसको क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए सब लिखा है। जीव का मुख्य लक्ष्य मोक्ष पाना है जो मनुष्य योनि में ही सम्भव है। मनुष्य के लिए चार पुरूषार्थ निर्धारित किये गये है। वे हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म, अर्थ और काम को धार्मिक भावना के साथ कर्त्तव्य भाव से करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मनुष्य को कैसे जीना चाहिए जिससे वह मोक्ष प्राप्त कर सके यह सब ज्ञान वेदों में है, यानि वेद पूर्ण ज्ञान के भण्डार है। पूर्ण ज्ञान वही दे सकता है जो स्वयं में पूर्ण होगा। जीव अल्पज्ञ है वह वेद-ज्ञान नहीं दे सकता। ईश्वर पूर्ण है उसी ने वेद-ज्ञान दिया है। पूर्ण ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान भी पूर्ण होगा। इसलिए वेद ज्ञान भी अपने आप में पूर्ण है जो ईश्वर से आदि सृष्टि में मनुष्य उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों द्वारा जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे उनके मुखों से चारवेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, व अथर्ववेद क्रमश: उच्चारित करवाए। पूर्ण का ज्ञान भी पूर्ण होता है इसलिए वेद-ज्ञान भी पूर्ण है।

3. वेदों में किसी के प्रति कोई भेद-भाव नहीं: ईश्वर ने वेद-ज्ञान केवल मानव-मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र के कल्याण के लिए दिया है। ईश्वर सब जीवों को उनके कर्मानुसार योनियों में भेजता है इसलिए ईश्वर सब का पिता हुआ और सब जीव उसके पुत्रवत् हुए। कोई भी पिता अपने पुत्रों में कोई भेद-भाव नहीं रखता। सब के कल्याण की सोचता है इसलिए ईश्वर भी सब जीवों के कल्याण को सोचता है। वेदों में सभी जीवों के कल्याण व उपकार की बातें हैं इसलिए सिद्ध होता है कि वेद का ज्ञान ईश्वर का दिया हुआ है। यदि किसी मनुष्य का दिया हुआ होता तो उसमें भेद-भाव होता कारण मनुष्य अल्पज्ञ है वह अपनों का कल्याण व उपकार करना चाहता है सबका नहीं।

4. वेदों के सभी मन्त्र बहुवचन में है-वेद पूरे मानव-मात्र के है इसलिए उनके सभी मन्त्र बहुवचन में है। यदि किसी एक देश या समुदाय का होता तो एक वचन में होता। वेदों के सभी मन्त्र ईश्वर को सम्बोधित करके लिखे गये है। इसलिए वेद, ईश्वर के बनाए हुए है। उदाहरण के लिए दो मन्त्र, अर्थ सहित यहाँ लिखे जाते हैं।

ओ३म् विश्यानि देव सवित-र्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्म आ सुव।
यजु० अ० 30। मन्त्र ३।।

अर्थ-हे सकल जगत् के उत्पत्ति कर्त्ता समग्र ऐश्वर्य युक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर। आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कीजिए और जो कल्याण कारक गुण, धर्म, स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।

दूसरा मन्त्र-**ओ३म् सनो बन्धुर्ज नितो स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्व। यत्र देवा अमृतमान शाना स्तृतीये धामन्न ध्यैरयन्त।।**
यजु० 32। म० १०।।

अर्थ-हे मनुष्यों ! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों को पूर्ण करने हारा, सम्पूर्ण लोक-मात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है और जिस संसारिक सुख-दु:ख से रहित नित्यानन्द युक्त, मोक्ष स्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त हो के विद्वान् लोग स्वेच्छा पूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरू, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।

इन दो मन्त्रों से यह सिद्ध हो गया है कि वेदों के सभी मन्त्र बहु वचन में है और ईश्वर को ही सम्बोधित किया गया है। इसलिए वेद ईश्वर की ही रचना है।

आर आर बावा डी ए वी कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, बटाला में नव सेमैस्टर एवं नव वर्ष के शुभारम्भ पर हवन यज्ञ

आर आर बावा डी ए वी कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, बटाला में प्रिंसीपल प्रो. डॉ. (श्रीमती) नीरू चड्ढा की अध्यक्षता में, स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में श्रीमती राज शर्मा को-आर्डीनेटर एवं प्रो. सुनील दत्त को-आर्डीनेटर के संयोजन में नव सेमैस्टर के एवं नव वर्ष के शुभारम्भ पर हवन यज्ञ का आयोजन कॉलेज यज्ञशाला में किया गया। इस अवसर पर श्री राजेश कवात्रा, श्री सतीश सरीन एवं श्री विनोद सचदेवा वरीष्ठ स्थानीय समिति सदस्य विशेष रूप से उपस्थित हुए। इस अवसर पर समस्त प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण एवं विद्यार्थियों ने हवन यज्ञ में वैदिक मन्त्रोच्चारण सहित आहुतियां डालकर परस्पर एवं सबके लिए मंगलकामनाएं की।

प्रिंसीपल प्रो. डॉ. (श्रीमती) नीरू चड्ढा ने श्री राजेष कवात्रा, श्री सतीश सरीन एवं श्री विनोद सचदेवा का अभिनन्दन एवं धन्यवाद किया; यज्ञ भगवान् से सभी के लिए मंगलकामनाएं की, उन्होंने कहा कि परमात्मा कॉलेज को उन्नति के शिखर तक ले जाने में हमारे प्रयत्नों को सार्थक करें हम सब मिल कर सहयोगपूर्वक कार्य करें, डीएवीन के आदर्शों एवं आर्यरत्न पूनम सूरी जी द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो, श्री राजेश कवात्रा जी एवं श्री सतीश सरीन जी ने भी प्रिंसीपल, प्राध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं विद्यार्थियों को समस्त समिति की ओर से शुभकामनाएं दी एवं कॉलेज के और विकास के लिए हर प्रकार से सदैव सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्रीमती राज शर्मा को-आर्डीनेटर स्वामी दयानन्द अध्ययन केन्द्र ने भी सभी का इस अवसर पर पधारने के लिए धन्यवाद किया एवं शुभकामनाएं दी। शान्तिपाठोपरान्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

-नीरू चड्ढा बावा डी. ए. वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, बटाला

www.thearyasamaj.org

त्यागपूर्वक भोग

ले. नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मंत्र का अंश "**तेन त्यक्तेन भुंजीथा**" हम मनुष्यों को त्यागपूर्वक भोग करने का आदेश देता है। सुनने और देखने में त्याग और भोग दोनों विपरीतधर्मी प्रतीत होते हैं। सामान्य मनुष्य यही सोचता है कि यदि किसी साधन, सुविधा या वस्तु का भोग ही कर लिया तो उसका त्याग कैसे संभव है और यदि त्याग कर दिया तो भोग कैसे कर सकते हैं। परन्तु यदि चिन्तन करें तो स्पष्ट हो जाता है कि "ना भोगने का नाम त्याग नहीं है अपितु भोग से ना चिपटने, भोग्य पदार्थों में अनासक्ति, भोग्य पदार्थों के संग्रह की भावना को छोड़ने का नाम ही त्याग है।"

मनुष्य की जीवन यात्रा के उत्तरोतर क्रमिक विकास पर दृष्टिपात करें तो त्याग का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। जिस प्रकार उपर छत पर चढ़ने के लिए हमें सीढ़ी उपर जाने के लिए उससे पूर्व की सीढ़ियों को छोड़ना या उनका त्याग करना अनिवार्य हो जाता है। यदि व्यक्ति पहली सीढ़ी पर ही चिपका रहे या खड़ा रहे तो वह चाह कर भी उपर नहीं चढ़ पाएगा। इस दृष्टांत से यह तो स्पष्ट है कि उपर चढ़ने के लिए लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सीढ़ियों अर्थात् साधन का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है लेकिन इस साधन का प्रयोग साधक द्वारा सदा साध्य की प्राप्ति के लिए ही किया जाना चाहिए। यदि साधक साधन को ही साध्य मान ले और उससे चिपक जाए तो वह कभी भी साध्य की प्राप्ति नहीं कर सकता। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि साधन कभी भी साधक के साथ नहीं चिपकता। कभी सीढ़ी बंधन बन कर पथिक के पैरों को नहीं बांधती यह तो पथिक ही आलस्य वा प्रमादवश सीढ़ी पर खड़ा रह जाता है। साधन से प्रेम करके उससे चिपकने वाला व्यक्ति कभी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। मधुमक्खी यदि अपने बनाए मधु में ही फंस जाए तो छटपटा कर मर जाती है। ठीक यही स्थिति हम मनुष्यों की ईश्वर प्रदत्त प्रकृति इसके सौंदर्य ऐश्वर्य को लेकर है।

परन्तु यह भी ठीक है कि सृष्टि के रचयिता परमपिता परमेश्वर ने इस सृष्टि का निर्माण इस सृष्टि में रहने वाले जीवों के उपभोग व उपयोग के लिए किया है और जीव का अधिकार है कि वह इन ईश्वर प्रदत्त साधनों का उपयोग करे। त्रैतवाद के सिद्धांत को पुष्ट करता सुप्रसिद्ध वेद मंत्र "**द्वा सुपर्णा...**" स्पष्ट रूप से जीव द्वारा प्रकृति के फल के भोग के अधिकार को स्थापित करता है। परन्तु **तेन त्यक्तेन भुंजीथा** मंत्र में इस अधिकार की सीमा स्पष्ट है। यानि मनुष्य त्यागपूर्वक भोग करे। इसके लिए हमें यह समझना होगा कि इन साधनों के प्रयोग का अधिकार ईश्वर प्रदत्त है। और इन साधनों के ईश्वर प्रदत्त होने के कारण इनका उपयोग साध्य की प्राप्ति के लिए किया जाना चाहिए।

जगत के उपयोग में त्यागभाव धर्म का मुख्य अंग है। त्याग के बिना लक्ष्य की प्राप्ति संभव नहीं है। संसार के समस्त अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होते हैं। मनुष्य का जीवन सदा देने के लिए होता है लेने के लिए नहीं। जैसे बादल उचाई को पाकर सबके उपकार के लिए बरसते हैं वैसे ही मनुष्य भी अपने जीवन में उपर उठकर दूसरों का उपकार किया करे। खुशी का सबसे बड़ा रहस्य यही त्याग की भावना है। खुशी इस बात पर निर्भर करती है कि आप क्या दे सकते हैं। त्याग के बिना ना तो ईश्वर प्रेरणा होती है और ना ही प्रार्थना। त्याग के समान कोई सुख नहीं होता। इसलिए मनुष्य को साधक के रूप में ईश्वर प्रदत्त साधनों का उपयोग उपभोग त्यागपूर्वक करते हुए अपने लक्ष्य साध्य की प्राप्ति के लिए करना चाहिए।

लोहड़ी व मकर संक्राति का त्योहार मनाया गया

आर्य महिला कालेज धूरी में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य कालेज के प्रागण में अग्नि प्रज्वलित करके वेद मन्त्रों के द्वारा तिल, गुड़, मंगफलियों के द्वारा आहूतियां डाली गयी, यह त्योहार महाशय प्रतिज्ञा पाल जी की अध्यक्षता में एवं आर्य कालेज के प्रधान अशोक जिन्दल व मैनेजर पवन कुमार गर्ग के अगुआई में मनाया गया। कालेज के सभी अध्यापिका एवं छात्राओं ने बड़े उत्साह व प्रेरणा के साथ लोहड़ी व मकर संक्राति का त्योहार मनाया आर्य कालेज के प्रिंसिपल बी. एल. कालीया जी ने लोहड़ी के इस त्योहार के महत्व को बताते हुए कहा की समाज में लड़कायों-बेटीयो को सम्मान मिलना चाहिए ताकि देश में हो रहे लड़कियों पर अत्याचार से लड़ने की शक्ति मिले। शरीर में जो नाड़ी का स्थान है, वही समाज में नारी का स्थान है महत्व है। कालेज के छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के बाद आर्य कालेज के प्रधान अशोक जिन्दल ने सभी को लोहड़ी व मकर संक्रांति की शुभ कामनाएं और सभी को धन्यवाद किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के सभी एवं सदस्यगण भी उपस्थित रहे। अधिकारीगण प्रधान प्रहलाद आर्य, सोम प्रकाश आर्य, विवेक जिन्दल विकास जिन्दल, आर. पी. शर्मा, विकास शर्मा वासुदेव आर्य, राजीव मोहिल, सतीश आर्य, रमेश आर्य, विरन्द्र कुमार गर्ग, रामपाल आर्य मंत्री, आर्य कालेज के प्रोफेसर धर्म देव हुमन, अशोक गर्ग, श्याम आर्य, बचन लाल गोयल, डा० सुरजीत सरीन, एवं स्त्री आर्य समाज के प्रधाना कृष्णा आर्य, मधुरानी कुसुम गर्ग, दर्शना देवी, शिमाल देवी, उर्मिला देवी, निगम पाल, मोनिका वातस, प्रिंसीपल आर्य माडल स्कूल, श्रीमति निशा मित्तल प्रिंसिपल महाशय चेतराम टैक्नीकल इन्सटीचयूट, धूरी व सभी तीनों शिक्षण संस्था के अधिकारीगण भी उपस्थित रहे। उसके बाद सभी छात्राओं को मुंगफलियां रेवड़ीया बाटी गई।

-प्रधान अशोक जिन्दल, आर्य कालेज, धूरी

लोहड़ी व मकर संक्राति का त्योहार मनाया गया

लोहड़ी व मकर सक्रांति का त्यौहार मनाया गया। यश चौधरी आर्य माडल स्कूल धूरी में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्कूल के प्रांगण में वैदिक मंत्रों के द्वारा अग्नि प्रज्जवल करके तिल, गुड़, मूंगफलियां, गच्चक से अग्नि में आहूतियां दी गई। यह त्यौहार स्कूल के प्रधान सोम प्रकाश आर्य, मैनेजर सतीश पाल आर्य की अध्यक्षता व प्रिंसीपल मोनिका वाट्स की अगुवाई में मनाया गया। स्कूल की सभी अध्यापिकाओं व छात्र छात्राओं ने बड़े धूम-धाम व उत्साह के सभी मिलकर मनाया।

स्कूल के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पंजाब के लोक नृत्य गिद्दा व भांगड़ा से प्रारंभ किया। मंच का संचालन अध्यापिका श्रीमति सीमा रानी व अमृत पाल ने बड़े सरल शब्दों के साथ किया। इस कार्यक्रम के अवसर पर आर्य समाज के सदस्यगण व अधिकारीगण भी उपस्थित थे। आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य, वीरेन्द्र कुमार गर्ग, राजीव मोहिल, मैडम आरती तलवाड़, श्रीमति निशा मित्तल, पुरोहित शैलेश कुमार शास्त्री, बी० एल० कालिया प्रिंसीपल आर्य स्कूल व माडल स्कूल की सभी अध्यापिकाएं उपस्थित रही।

कार्यक्रम के अन्त में स्कूल को मोनिका वाट्स जी (प्रिंसीपल) ने आये हुए आर्य समाज के सभी सदस्यों को और सभी अतिथियों को लोहड़ी व मकर सक्रांति की शुभकामनाएं दी तथा सभी को धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के बाद सभी छात्र-छात्राओं को रेवड़ी, मूंगफलियां गच्चक का प्रसाद दिया गया।

-प्रिंसीपल श्री मति मोनिका वाट्स यश चौधरी
आर्य माडल स्कूल, धूरी।

www.thearyasamaj.org

कुछ सवाल-जवाब (चौथी किश्त)

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

'कुछ सवाल-जवाब' की तीन किश्त लिख चुका हूँ। पत्र-पत्रिकाएँ उन्हें अपनी-अपनी सुविधानुसार प्रकाशित कर रही हैं। जिन आत्मीयजन एवं विद्वानों को उन्हें देखने का अवसर मिला है, उन्होंने दूरभाष पर साधुवाद दिए हैं। पाठकों को प्रश्नोत्तर शैली बोधगम्य और चुम्बकीय लगी। विद्यार्थी जीवन के एक सहपाठी अशोक 'नादान' (कवि, गीतकार, संगीतज्ञ) ने तो आहलादित होकर अपने जीवन के पाँच वर्ष दे दिए हैं। मैंने कहा-मेरे स्वस्थ होने की कामना कर।

'कुछ सवाल-जवाब' श्रृंखला इसलिये पसन्द की जा रही है कि सवाल करने वाली जीवात्मा, दो टूक भाषा में, सीधे परमात्मा से ही सवाल कर रही है और परमात्मा भी पूर्व प्रदत्त वेदज्ञान को आर्यभाषा (हिन्दी) में ही समझा कर महर्षि दयानन्द को अनन्त काल के लिये प्रासंगिक बनाए रखना चाहता है। महर्षि ने प्रगाढ़ समाधि अवस्था में रहकर, उस वेदज्ञान को जो परमात्मा ने आदित्य, अंगिरा, अग्नि और वायु महर्षियों को अपनी भाषा (संस्कृत) में दिया था, उस ज्ञान को महर्षि दयानन्द ने कुल 59 वर्ष की आयु के सक्रिय भाग, लगभग 15 वर्ष में यजुर्वेद भाष्य, ऋग्वेद भाष्य व अन्य अनेक ग्रंथों का प्रणयन कर, प्रवचन व शंका समाधान कर जनसाधारण को आर्यभाषा (हिन्दी) में उपलब्ध कराया, नित्यत्व प्रदान किया। महर्षि की मातृभाषा गुजराती थी, अध्ययन व प्रवचन की भाषा भी काफी समय संस्कृत ही रही। जनसाधारण तक पहुँचने के लिये हिन्दी भाषा को जन्म दिया, उसे संवारा अन्यथा यह अल्पज्ञ ही नहीं करोड़ोंजन वेदज्ञान से वंचित रह जाते अस्तु...

सवाल-जवाब प्रारम्भ करने की अनुमति चाहता हूँ।

अनुमति है, शुरु करो।

प्रश्न 1. लगभग पाँच वर्ष से वेदोक्त कर्मफल सिद्धान्त और उसके अन्तर्निहित जन्म-मरण चक्र को समझने का प्रयास कर रहा हूँ पर पूरी तरह समझ नहीं पा रहा हूँ और जो समझा है, उसे आत्मसात नहीं कर पा रहा हूँ।

उत्तर-क्यों नहीं समझ पाए ?

प्रश्न 2. संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं है, इसलिये वेदों का स्वाध्याय नहीं किया है। गुरुकुल में पढ़कर विद्यालंकार और वेदालंकार की उपाधि भी प्राप्त नहीं की है और न कहीं महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया है।

सिर्फ बी. ए. की डिग्री, वह भी अपने अपराध के कारण तीसरी श्रेणी में प्राप्त कर केन्द्र के महालेखाकार कार्यालय म. प्र. ग्वालियर में, शासन की सेवा की। पत्नी भी सौभाग्य से शासकीय सेवा में कार्यरत मिली। फलस्वरूप हम दोनों ने माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा कर उनका और आपका आशीर्वाद प्राप्त किया।

उत्तर-माता-पिता की सेवा से उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है, यह बुद्धि कैसे मिली ?

प्रश्न 3. आपने ही तो कहा है-मातृमान, पितृमान, आचार्यमान पुरुषो वेद:। तीनों ही पूज्जनीय हैं, ऐसा भाव रखकर, सेवा करने से तहे दिल से, हृदय के कोने-कोने से आशीर्वाद बरसेगा। यह ज्ञान लाखों वर्षों से आर्य संस्कृति का अंग बना हुआ है।

उत्तर-ठीक है। आगे बढ़ो। मूल प्रश्न पर आओ।

प्रश्न 4. कर्मफल सिद्धान्त बड़ा उलझन भरा, प्रश्न है। मेरे लिये अनसुलझी पहेली है।

उत्तर-वह तो रहेगी क्योंकि तुम्हें संस्कृत आती नहीं, वेद तुमने पढ़े ही नहीं।

प्रश्न 5. यह तो मैं पूर्व में ही स्वीकार कर चुका हूँ। बार-बार लात मारने से क्या होगा ?

उत्तर-महर्षि दयानन्द को पढ़कर भी नहीं समझ पाए ?

प्रश्न 6. नहीं, क्योंकि अगाध मेधा, बुद्धि का विख्यात पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जिसे अंग्रेजी व संस्कृत का चूणान्त ज्ञान प्राप्त था और हिन्दी सहित तीनों भाषाओं में, भाषणों से, लेखन से अपने विचारों को अभिव्यक्ति दे सकता था, वही जब सत्रह बार मनोयोग-पूर्वक अध्ययन कर 'सत्यार्थ प्रकाश' का सम्पूर्ण ज्ञान आत्मसात नहीं कर पाया तो मैं कहाँ लगता हूँ !

उत्तर-अच्छा, बताओ कि क्या तुम्हें पूर्ण विश्वास हो गया है कि मैं परमात्मा, निराकार, सर्वव्यापक और न्यायकारी हूँ।

प्रश्न 7. लगता है, समझ में आ गया है पर सच कहूँ तो विश्वास की अंतिम सीमा तक नहीं।

उत्तर-क्यों ?

प्रश्न 8. 'विश्वास' किसी भी परिस्थिति में न जगमगाए उसे ही तो 'विश्वास' कहेंगे।

उत्तर-हाँ, बिल्कुल ठीक कहा तुमने।

प्रश्न 9. अभी तक यानी 78 वर्ष की आयु तक ऐसी परिस्थिति ही नहीं आई जिसमें विश्वास जड़ से हिल गया हो। दु:ख जन्य पीड़ा अवश्य हुई।

उत्तर-ज़रा स्पष्ट करो।

प्रश्न 10. जड़ से मृत्यु ही हिला सकती है। माता-पिता, दो बहन, दो बहनोई, एक सबसे बड़े भाई के स्वर्गवास होने पर आघात लगा पर ऐसा आघात नहीं कि पूरा जीवन ही हिल जावे। इन सबका महाप्रयाण तो आपकी जीवन-मरण व्यवस्था का स्वाभाविक परिणाम था। ये सब पकी आयु में ही गए।

उत्तर-फिर समस्या क्या है ?

प्रश्न 11. प्रभु ! वैदिक धर्म में दो पीढ़ियों से आस्था रखने वाले, आर्यसमाज व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाओं में धन वर्षा करने वाले परिवार के तीन युवकों को 20 से 25 वर्ष की आयु में मौत निगल ले गई। इस परिवार की आपकी न्याय व्यवस्था व कर्मफल सिद्धान्त में आस्था पूर्णतय: ध्वस्त हो गई है। सम्पूर्ण परिवार व आत्मीयजन निराशा के गहन गर्त से उबर नहीं पा रहे हैं। आजीवन-नहीं, नहीं, सरल स्पष्ट भाषा में कहें तो मरने तक भी उनके जख्म नहीं भर पाएंगे। वर्षों से अर्जित ज्ञान, दसियों वर्ष में सुने-उपदेश-प्रवचन एक झटके में विस्मृत हो गए। ये जीवात्माएँ दर-दर पर सर पटकने को मजबूर हैं।

उत्तर-वैदिक ज्ञान में कमी-न्यूनता के कारण यह परिवार भयंकर मानसिक आघात नहीं झेल रहा है। इस ज्ञान को संन्यासियों और विद्वानों ने मानसिक धरातल पर ही परिपुष्ट किया है और शाब्दिक जाल बना कर परोसा है। इसलिये श्रोताओं और पाठकों पर इनके प्रवचनों या लेखन का असर नहीं होता। गुरु निवास छोड़ने के पश्चात् लम्बे समय तक महर्षि दयानन्द स्वयं इस समस्या से जूझते रहे। सर्वप्रथम आगरा, ग्वालियर फिर जयपुर आदि के भ्रमण में, प्रवचनों में, इस प्रभाव की कमी उन्हें खली और वे निरन्तर गुरु विरजानन्द जी महाराज के पास, विचार-विमर्श के लिये जाते रहे।

दूसरे, ये लोग ऐसी सामाजिक संरचनाएँ स्थापित नहीं कर पाए जो मानव जीवन में आने-वाले घात-प्रतिघातों को सहनीय बना देती। महर्षि दयानन्द ने आश्रम व्यवस्था का समर्थन ही इसलिये किया था कि व्यक्तिगत सुख-दु:ख की सीमा से हटकर, व्यक्ति, समष्टिगत सुख-दु:ख में अपने को डुबा दे। इस व्यवस्था को सफलता नहीं मिली। आज भी आश्रम व्यवस्था के परिवर्तित रूप में जो व्यक्ति सामाजिक सरोकार वाले प्रकल्पों से जुड़े हैं, उनके मानसिक क्षितिज का विस्तार हुआ है। उन्हें दूसरों के विकराल दु:खों को देखकर अपने दु:खों का भार सहनीय लगता है। एक व्यक्ति रोज प्रात: गुलाब का फूल लेकर कैंसर वार्ड में जाता है, मरीज का कुशल क्षेम पूछता है और गुलाब का फूल देकर दूसरे मरीज के पास बढ़ जाता है।

सामाजिक व्यवस्थाएँ पैदा करना जीवात्मा का काम है, मेरा नहीं। तुम कर्मफल सिद्धान्त, जीवन-मरण के बारे में प्रश्न करना चाहते थे, वही करो। **(क्रमश:)**

www.thearyasamaj.org

वेदवाणी

सत्य बहरे कानों में भी घुस जाता है

ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वी :
ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति।
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द
कर्णा बुधान : शुचमान आयोः।।

-ऋ ४।२३।८

ऋषिः-वामदेवः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-त्रिष्टुप्।।

विनय-प्यारो ? सत्य के माहात्म्य को देखो ? सत्य में वे सनातन ऐश्वर्य व बल हैं, जिनसे शोक रुक जाता है। एक बार सत्य-ज्ञान होने पर संसार के सब शोक-घोर-से-घोर दुःख-खेल दीखने लगते हैं। अनादि काल से जो भी कोई शोक के पार हो गये हैं, उन सबको किसी-न-किसी तरह सत्यज्ञान की ही प्राप्ति हुई थी।

किसी भी वर्जनीय वस्तु से, पाप से छुटकारा चाहते हो तो सत्य का सहारा लो। सत्य को धारण करते ही मनुष्य में कोई भी बुराई नहीं ठहर सकती। जितनी मात्रा में हममें सच की कमी होती है, उतनी ही मात्रा में हमारे अन्दर बुराई को रहने की जगह होती है। जो पूरा सच्चा है, उसमें बुराई ठहर ही नहीं सकती, अतः केवल इतना आग्रह रखो कि हम सत्य का ही पालन करेंगे तो इससे हमारे अन्दर की सब वर्जनीय वस्तुएँ-वस्तुतः ये वर्जनीय वस्तुएँ पापी ही हैं और कुछ नहीं, स्वयं नष्ट हो जाएँगी।

और यदि हम सच्चे हैं तो हमारी बात प्रतिद्वन्द्वी को भी अवश्य सुननी पड़ती है, हमारी सच्चाई का उस पर भी अवश्य प्रभाव होता है। यह हो ही नहीं सकता कि सच्चाई का प्रभाव न हो। सच्ची आवाज़ 'शुचमान' होती है, उसमें एक तेज होता है, अतएव यह 'बुधानः'-जगाने वाली होती है। इस तेज के सामने स्वार्थी मनुष्य को (जो अपनी स्वार्थ-हानि के डर से सच्चाई को अनसुनी करना चाहता है) अपने कानों के द्वारों को खोलना पड़ता है। सच्चाई ऐसी जगाने वाली शक्ति होती है जो अज्ञान के कारण अभी तक समझ नहीं रहा है उसमें चेतना और जागृति पैदा कर देती है। सच्ची आवाज़ सीधी हृदय में जा पहुँचती है। जहाँ सत्य की सुनवाई होना पहले असम्भव जान पड़ता है, वहाँ भी अन्त में सत्य को मानना पड़ता है। निःसन्देह सच्चाई बहरे कानों को भी बेधकर घुस जाती है।

आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल पुराना बाजार लुधियाना में खेलकूद प्रतियोगिता मनाई गई

आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल पुराना बाजार लुधियाना में खेलकूद प्रतियोगिता मनाई गई। जिसमें कक्षा I से XII तक के बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी में आए छात्राओं के लिए पुरस्कार वितरण किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती ज्योति शर्मा जी ने बच्चों के उत्साह को देखकर उन्हें जीवन में खेलकूद का महत्त्व बताया। मुख्य अतिथि श्रीमती विनोद गाँधी जी ने बच्चों को इसी प्रकार जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर विद्यालय की प्रबन्धक कर्तृ सभा की मैनेजर श्रीमती राजेश शर्मा जी ने आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। श्रीमती जनक रानी, श्री विजय सरीन जी, श्री जे. पी. पनेसर जी, श्री चन्द्र गम्भीर जी, श्री जनक व श्रीमती रेखा प्रधानाचार्या आर्य सी. सै. स्कूल भी मौजूद थे।

-प्रधानाचार्या आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल लुधियाना

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।